उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन का उनके लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन

(उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा के विकासखण्ड चौखुटिया के विशेष सन्दर्भ में)

गिरीश चन्द्र तिवारी
सहायक प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
डा.बी.जी.आर परिसर पौड़ी गढवाल

डा. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर (बी.एड विभाग)
स्व. जय दत्त वैला रा.स्ना. महाविद्यालय
रानीखेत

सारांश

माध्यमिक शिक्षा की शुरुआत किशोरावस्था में होती है। इस अवस्था में किशोरों का बौद्धिक विकास अपनी चरम सीमा पर पहुॅच जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि सोलह वर्ष की उम्र तक सामान्यतः मानसिक आयु में वृद्धि होती है किन्तु इस समय किशोर की मनः स्थिति अस्थिर होती है। रॉस ने इस अवस्था को "शैशवावस्था की पुनरावृत्ति" कहा है। इस समय उसमें इतनी तेजी से परिवर्तन होते हैं कि वह कभी कुछ विचार करता है और कभी कुछ उसकी मनोदशा अस्थिर होती है। फलस्वरूप वह अपने घर, परिवार, पड़ोस, समाज, विद्यालय आदि से समायोजन करने में असमर्थ होता है। अतः बालक की संवेगात्मक बुद्धि का विकास व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों ही दृष्टि से बहुत उपयोगी है।

सामान्य बुद्धि के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह वंशक्रम एवं वातावरण दोनों की ही उपज है। एक बालक अपने जन्म के समय कुछ न कुछ बुद्धि लेकर ही इस धरती पर आता है। जिसे आगे चलकर अनुभव और परिपक्वन की प्रक्रिया द्वारा अपेक्षित ऊॅचाईयों पर पहुॅचाने के प्रयत्न किये जाते रहते हैं। इसी रूप में सभी बालकों में अपने जन्म के समय कुछ न कुछ संवेगात्मक बुद्धि भी पायी जाती है और इसे भी अनुभव, प्रशिक्षण एवं परिपक्वन के माध्यम से आगे के विकास की दिशा प्राप्त होती रहती है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि किशोरावस्था में समायोजन स्थापित करने में संवेगात्मक बुद्धि का अत्यधिक महत्व होता है। संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ ही यह है कि व्यक्ति विशेष की वह समग्र क्षमता जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा ऐसी उचित अनुभूति तथा अभिव्यक्ति करने कराने में इस प्रकार मदद करे कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियायें कर सके जिनसे दूसरों के साथ समायोजन स्थापित करते हुए अपना तथा समाज का समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अच्छे अवसर प्राप्त हो सकें।

व्यक्ति को जितना अपने आपसे सन्तुष्ट तथा समायोजित होने की आवश्यकता होती है उतनी ही अपने सामाजिक परिवेश से जुड़ी हुई बातों तथा व्यक्तियों के साथ उचित तालमेल बनाये रखकर समायोजित रहने की होती है। जो अपने परिवेश तथा उसमें उपलब्ध परिस्थितियों से भी सन्तुष्टि का अनुभव करना चाहिए तभी वह ठीक तरह समायोजित रह सकता है। सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर –परिवार से शुरू होकर विश्व–बन्धुत्व की सीमाओं को छूता है। प्रस्तुत शोध पत्र "अल्मोड़ा जनपद के विकासखण्ड चौखुटिया में ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विधार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन का उनके लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन '' शोध किया गया है। जनपद अल्मोड़ा के विकासखण्ड चौखुटिया में विधार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के लिए चयनित 50 छात्र एवं 50 छात्राएँ कक्षा 11वीं एवं 12वीं सरकारी विद्यालयों से लिये गये। इसमें संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु मंगल संवेगात्मक बुद्धि सूची एवं सामाजिक समायोजन मापन हेतु देवा सामाजिक समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है।

विशिष्ट शब्दः *माध्यमिक षिक्षा, लिंग, संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक समायोजन, सरकारी विद्यालय*

१.प्रस्तावना

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा के एडोलसेन्स शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का वसंतकाल माना गया है। यह 12–19 वर्ष तक रहता है, परन्तु किसी–किसी व्यक्ति में यह बाईस वर्ष तक हो सकता है। यह काल भी सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ–साथ बालक की कल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौन्दर्य की रूचि उत्पन्न होती है। और बालक इसी समय नये–नये और ऊँचे आदर्शों को अपनाता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है। जिस बालक ने धन कमाने का स्वप्न देखा, वह अपने जीवन में धन कमाने में लगता है। इसी प्रकार जिस बालक के मन में कविता और कला के प्रति लगन हो जाती है, वह इन्ही में महानता प्राप्त करने की चेष्टा करता है और इनमें सफलता प्राप्त करना ही वह जीवन की सफलता मानता है। जो बालक किशोरावस्था में समाज सुधारक और नेतागिरी के स्वप्न देखते हैं, वे आगे चलकर इन कार्यों में आगे बढते हैं।

पश्चिम में किशोर अवस्था का विशेष अध्ययन कई मनोवैज्ञानिकों ने किया है। किशोर अवस्था काम भावना के विकास की अवस्था है। कामवासना के कारण ही बालक अपने में नवशक्ति का अनुभव करता है। वह सौन्दर्य का उपासक तथा महानता का पुजारी बनता है। उसी से उसे बहादुरी के काम करने की प्रेरणा मिलती है।

किशोर अवस्था शारीरिक परिपक्वता की अवस्था है। इस अवस्था में बच्चे की हड्डियों में दृढता आती है, भूख काफी लगती है। कामुकता की अनुभूति बालक को 13 वर्ष से ही होने लगती है। इसका कारण उसके शरीर में स्थित ग्रंथियों का स्राव होता है। अतएव बहुत से किशोर बालक अनेक प्रकार की कामुक क्रियायें अनायास ही करने लगते हैं। आधुनिक मनोविश्लेषण विज्ञान ने बालक की इस अवस्था की कामचेष्टा को स्वाभाविक बताकर, अभिभावकों के अकारण भय का निराकरण किया है। ये चेष्टायें बालक के शारीरिक विकास के सहज परिणाम हैं। किशोरावस्था की स्वार्थपरता कभी–कभी प्रौढ अवस्था तक बनी रह जाती हैं। किशोरावस्था का विकास होते समय किशोर को अपने ही समान लिंग के बालक से विशेष प्रेम होता है। यह जब अधिक प्रबल होता है तो समलिंगी काम क्रियायें भी होने लगती हैं। बालक की समलिंगी काम क्रियायें सामाजिक भावना के प्रतिकूल होती हैं, इसलिए वह आत्मग्लानि का अनुभव करता है। अतः वह समाज के सामने निर्भीक होकर नहीं आता। समलिंगी प्रेम के दमन के कारण मानसिक ग्रन्थि मनुष्य में पैरानोइया नामक पागलपन उत्पन्न करती है। इस पागलपन में मनुष्य एक आकर अपने आपको अत्यन्त महान व्यक्ति मानने लगता है और दूसरी ओर अपने साथियें को शत्रु रूप में देखने लगता है। ऐसी ग्रथियॉ हिटलर और उसके साथियों में थी, जिसके कारण वे दूसरे राष्ट्रों की उन्नति नहीं देख सकते थे। परिणामस्वरूप द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ा।

किशोर बालक उपर्युक्त मनः स्थितियों को पार करके विषमलिंगी प्रेम अपने में विकसित करता है और फिर प्रौढ अवस्था आने पर एक विषमलिंगी व्यक्ति को अपना प्रेम केन्द्र बना लेता है, जिसके साथ वह अपना जीवन व्यतीत करता है। कामवासना के विकास के साथ–साथ मनुष्य के भावों का विकास भी होता है। किशोर बालक के भावोद्वेग बहुत तीव्र होते है। वह अपने प्रेम अथवा श्रद्धा की वस्तु के लिए सभी कुछ त्याग करने को तैयार हो जाता है। इस काल में किशोर बालकों को कला और कविता में रूचि लाभप्रद होती है। जो बालक को समाजोपयोगी बनाती है।

किशोर बालक सदा असाधारण काम करना चाहता है। वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। जब तक वह इस कार्य में सफल होता है, अपने जीवन को सार्थक मानता है और असफल होने पर नीरस एवं अर्थहीन मानने लगता है। डींग मारने की प्रवृत्ति भी किशोर बालक में अत्यधिक पायी जाती है। सदा नये–नये प्रयोग करने की इच्छा रखता है। दूर–दूर तक घूमने में रूचि रखता है।

माध्यमिक शिक्षा स्तर प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसम्पत्ति, युवा शक्ति के नेतृत्व प्रशिक्षण का केन्द्र है। किसी भी राष्ट्र की मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग माध्यमिक शिक्षा स्तर से प्राप्त होता है क्योंकि माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवन यापन के क्षेत्र में प्रवेश द्वार खोलती है। विश्वविद्यालयों–महाविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा केन्द्रों के लिए छात्रों की पूर्ति का कार्य भी माध्यमिक शिक्षा करती है। उच्च शिक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा आधार शिक्षा का कार्य करती है। स्पष्ट है कि माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। माध्यमिक शिक्षा के इस महत्व के

कारण ही इसे शिक्षा रूपी प्राणी की रीढ की हड्डी भी कहा जाता है। जिस प्रकार से रीढ की हड्डी मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर को संभाले रखता है, ठीक उसी प्रकार से माध्यमिक शिक्षा भी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को संभालती है। माध्यमिक शिक्षा को आधुनिक युग की ही देन स्वीकार किया जाता है। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति पर प्रारम्भ होती है और उच्च शिक्षा से पूर्व समाप्त हो जाती है। कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा माध्यमिक शिक्षा कहलाती है। भारत में माध्यमिक शिक्षा का सूत्रपात करने का श्रेय ईसाई मिशनरियों को जाता है क्योंकि उन्होंने सर्वप्रथम 18 वीं शताब्दी के अन्त में इस देश के अनेक भागों में माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की।

हुमॉयू कबीर के अनुसार, "समाज की शिक्षा के किसी भी कार्यक्रम में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यंहा से प्राथमिक और वयस्क शिक्षा के लिए अध्यापक मिलते हैं यह छात्रों को विश्वविद्यालयों तथा उच्चत्तर अध्ययन की दूसरी संस्थाओं के लिए तैयार करते हैं।" यह एक ऐसी स्थिति है जिस पर सभी दिशा में बहुसंख्यक नागरिकों की शिक्षा समाप्त समझी जाती है, अल्पसंख्यक विद्यार्थी जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आगे जाते हैं वे तब तक विश्वविद्यलयों में प्राप्त होने वाले अवसरों का पूरा लाभ नहीं उठा सकते जब तक माध्यमिक शिक्षा की स्वस्थ प्रणाली द्वारा इसका आधार पक्का न कर दिया जाये। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा उच्च कोटि की हो तभी आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकेगा।

इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की सुदृढता पर ही राष्ट्र की शक्ति एवं भविष्य निर्भर करता है मध्यवर्ती स्तर पर कार्य करने वाले अनेक औद्योगिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेता इसी शिक्षा से तैयार होकर निकलते हैं। अधिकांश देशों में माध्यमिक शिक्षा के बाद ही विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हो पाते हैं। अमेरिका, रूस आदि देशों में तो माध्यमिक शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा के अन्तर्गत ले लिया गया है। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की उपादेयता शिक्षा जगत के लिए तो है ही साथ ही सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भी इसकी महत्ता स्वीकार की जाती है।

डा. आत्मानन्द मिश्रा के शब्दों में, "देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के ही ढाचे में बनते और बिगड़ते हैं, सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता इसी स्तर पर उत्पन्न की जाती है।"

२.अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन के बीच संबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. लिंग के सन्दर्भ में बालक एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन के बीच सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन का उनके लिंग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

३.प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में सहसम्बन्ध नहीं है।
2. लिंग के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं है।
3. लिंग के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

४.अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र अल्मोड़ा जिले के विकासखण्ड चौखुटिया की परिसीमा तक सीमित हैं।

५.न्यादर्श चयन

अल्मोड़ा जनपद के विकासखण्ड चौखुटिया के 10 विद्यालयों से कक्षा 11वीं एवं 12वीं के 100 छात्र–छात्राओं का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है।

६.शोध उपकरण

विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु –मंगल इमोशनल इन्वेन्टरी एवं सामाजिक समायोजन मापन हेतु देवा सोशल एडजेस्टमेन्ट इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया है।

७.सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्तों के विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, सहसम्बन्ध तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

८.परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया गया, जो निम्नानुसार है–

परिकल्पना–1–विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में सहसम्बन्ध नहीं है।

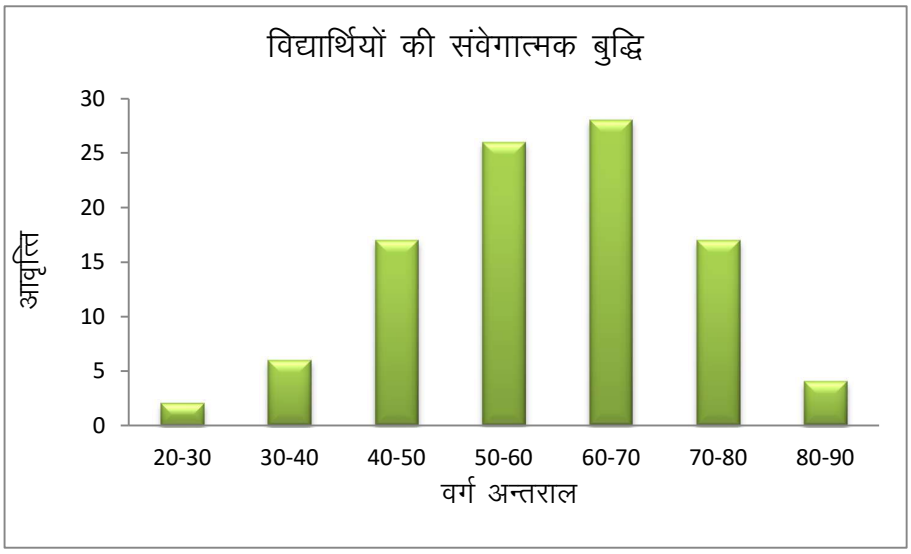

चित्र–1–विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का चित्ररेखीय निरुपण

उपरोक्त चित्र संख्या–1 विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों को प्रदर्शित कर रहा है। जिसके अनुसार निम्नतम वर्ग–अंतराल की सीमा 20–30 तथा उच्चतम वर्ग अन्तराल की सीमा 80–90 हे। चित्र के अनुसार सबसे कम आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 20–30 है, जिसमें विद्यार्थियों की संख्या 2 हैं। सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 60–70 है, जिसके अन्तर्गत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक अर्थात 28 है। वर्ग अन्तराल 40–50 तथा 70–80 ऐसे वर्ग अन्तराल हैं जिसके अर्न्तगत आने वाले विद्यार्थियों की संख्या समान अर्थात 17–17 है।

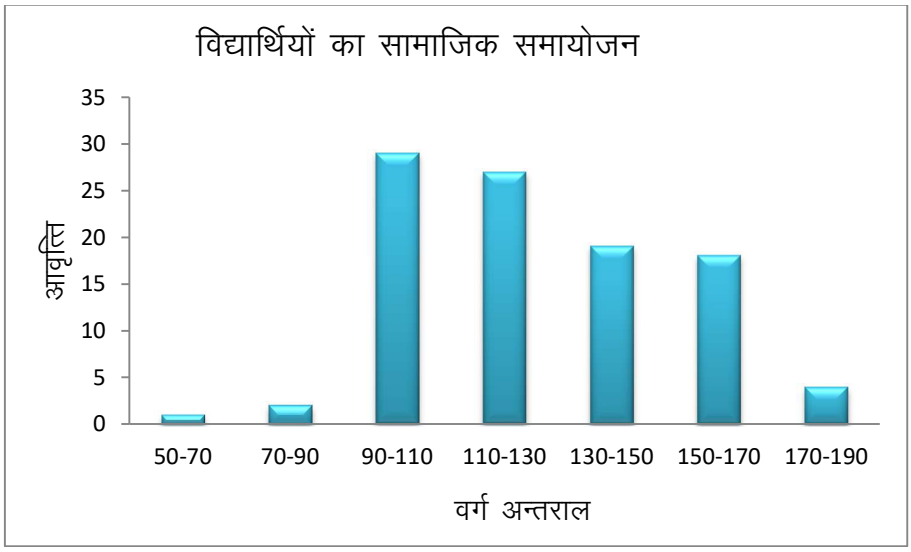

चित्र–2–विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का चित्ररेखीय निरुपण

उपरोक्त चित्र संख्या–2 विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों को प्रदर्शित कर रहा है। जिसके अनुसार निम्नतम वर्ग–अंतराल की सीमा 50–70 तथा उच्चतम वर्ग अन्तराल की सीमा 170–190 हे। चित्र के अनुसार सबसे कम आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 50–70 है, जिसमें विद्यार्थियों की संख्या सिर्फ 1 हैं। सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 90–110 है, जिसके अन्तर्गत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक अर्थात 29 है।

तालिका–1–विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन के विभिन्न सांख्यिकीय मान–

	संवेगात्मक बुद्धि	सामाजिक समायोजन
N	100	100
Min	27	58
Max	88	180
Sum	5844	12587
Mean	58.44	125.87
Variance	160.047	620.74
Stand. _dev	12.651	24.915
Median	59	122
25_prcntil	49.75	105
75_prcntil	69	145
Skewness	-0.250607	0.1336
Kurtosis	-0.289348	-0.5576
Geom._mean	56.9499	123.364

तालिका–2–सहसम्बन्ध का परिकलन

चर	N	∑dx	∑d² x	∑dy	∑d² y	∑dxdy	r
संवेगात्मक बुद्धि	100	44	15864	87	61529	16107	0.5149
समाजिक समायोजन							

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि परिगणित **r** का मान + 0.5149 है जो विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सह सम्बन्ध को दर्शाता है अतः शून्य परिकल्पना "विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में कोई सम्बन्ध नहीं है" अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना "विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में सम्बन्ध है" स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना –2–लिंग के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं है।

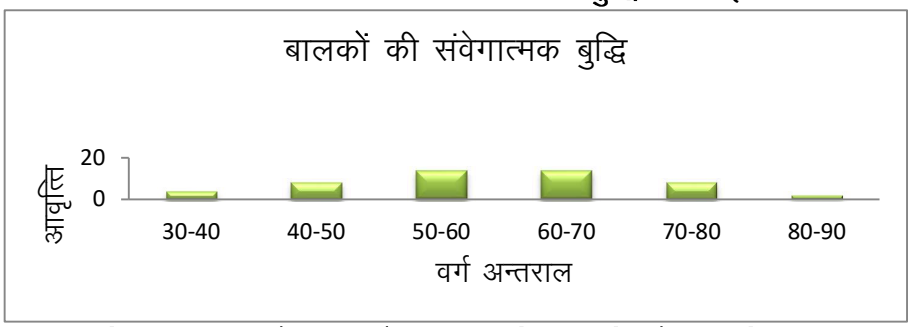

चित्र–3–बालकों की संवेगात्मक बुद्धि का चित्ररेखीय निरुपण

उपरोक्त चित्र संख्या–3 बालकों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों को प्रदर्शित कर रहा है। जिसके अनुसार निम्नतम वर्ग–अन्तराल की सीमा 30–40 तथा उच्चतम वर्ग अन्तराल की सीमा 80–90 हे। चित्र के अनुसार सबसे कम आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 80–90 है, जिसमें विद्यार्थियों की संख्या 2 हैं। सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल क्रमशः 50–60 व 60–70 हैं, जिसके अन्तर्गत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक अर्थात 14–14 है। वर्ग अन्तराल 50–60 तथा 60–70 ऐसे वर्ग अन्तराल हैं जिसके अर्न्तगत आने वाले विद्यार्थियों की संख्या समान अर्थात 14–14 है तथा वर्ग अन्तराल 40–50 व 70–80 ऐसे वर्ग अन्तराल हैं जिसके अर्न्तगत आने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी समान अर्थात 8–8 है।

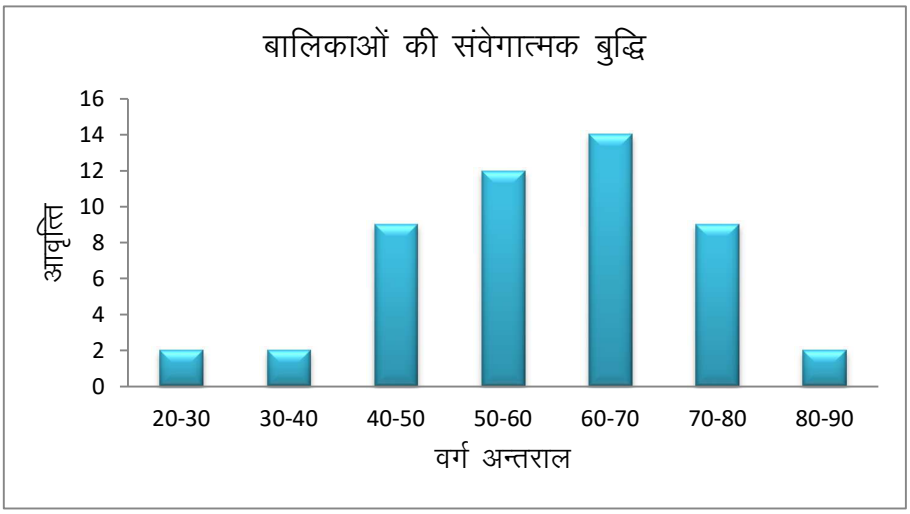

चित्र–4–बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का चित्ररेखीय निरुपण

चित्र संख्या–4 बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों को प्रदर्शित कर रहा है। जिसके अनुसार निम्नतम वर्ग–अन्तराल की सीमा 20–30 तथा उच्चतम वर्ग अन्तराल की सीमा 80–90 हे। चित्र के अनुसार सबसे कम आवृत्ति वाले वर्ग–अन्तराल 20–30, 30–40 तथा 80–90 है, जिसमें विद्यार्थियों की संख्या 2–2 हैं। सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 60–70 है जिसके अन्तर्गत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक अर्थात 14 है।

तालिका–3

	छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि	छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि
N	50	50
Min	33	27
Max	84	88
Sum	2930	2914
Mean	58.6	58.28
Std._error	1.2249	1.3163
Variance	160.047	173.2669
Stand._dev	12.24911	13.16309
Median	59	81
25_prcntil	50.25	49.25
75_prcntil	68.75	68.75
Skewness	-0.22399	-0.27328
Kurtosis	-0.47978	-0.09217
Geom._mean	57.24439	56.657

टी मान का परिकलन

प्रतिदर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	स्वातंत्र्य कोटि	संख्या	टी. मान	सार्थकता स्तर
छात्र	58.6	12.249		50		
छात्रायें	58.28	13.163	98	50	.897	.05

टी सारणी को देखने से पता चलता है कि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक होने के लिए टी को कम से कम 1.98 होना चाहिए। जबकि प्राप्त टी मात्र .897 है अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, इसका अर्थ यह हुआ कि बालक तथा बालिकाओं की उपलब्धियों में कोई वास्तविक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना –3–लिंग के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजना में कोई अन्तर नहीं है।

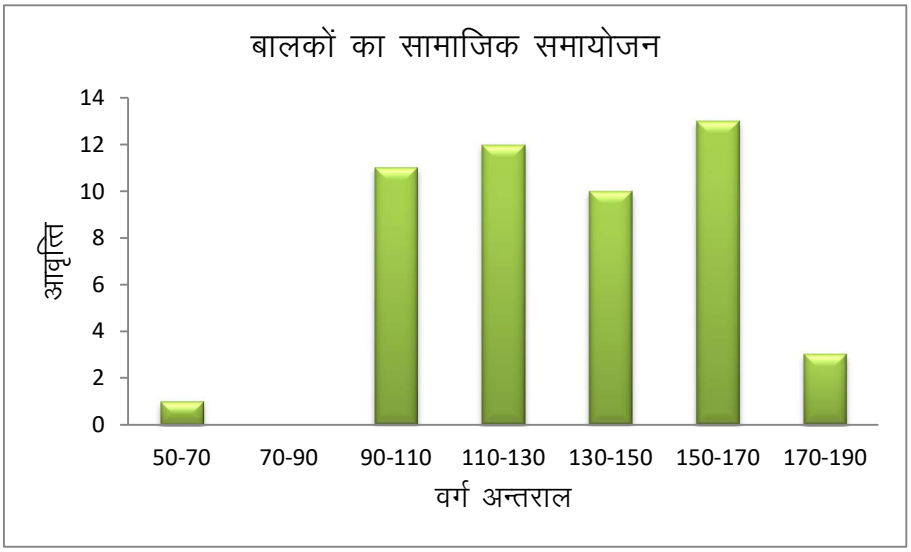

चित्र–5–बालकों के सामाजिक समायोजन का चित्ररेखीय निरुपण

उपरोक्त चित्र संख्या–9 बालकों के सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों को प्रदर्शित कर रहा है। जिसके अनुसार निम्नतम आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 50–70 है जिसकी आवृत्ति 0 है तथा उच्चतम आवृत्ति वाला वर्ग अन्तराल 150–170 जिसकी आवृत्ति 13 है।

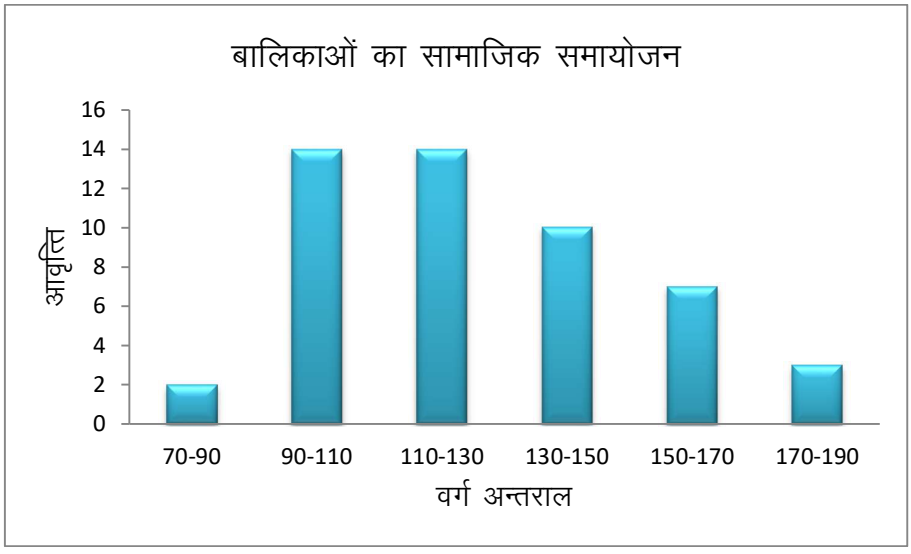

चित्र–6–बालिकाओं के सामाजिक समायोजन का चित्ररेखीय निरुपण

उपरोक्त चित्र संख्या–10 बालिकाओं के सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों को प्रदर्शित कर रहा है। जिसके अनुसार निम्नतम आवृत्ति वाला वर्ग–अन्तराल 70–90 है जिसकी आवृत्ति 2 है तथा उच्चतम आवृत्ति वाला वर्ग अन्तराल 90–110 तथा 110–130 हैं, जिनकी आवृत्तियॉ क्रमशः 14–14 अर्थात बराबर हैं।

तालिका–4

	बालकों का सामाजिक समायोजन	बालिकाओं का सामाजिक समायोजन
N	50	50
Min	58	78
Max	174	180
Sum	6592	6295
Mean	131.84	125.9
Std._error	2.5908	2.5624
Variance	671.2391837	656.622449
Stand._dev	25.90828407	25.62464534
Median	134.5	124
25_prcntil	112.25	105
75_prcntil	152	144.25
Skewness	-0.355684813	0.310459971
Kurtosis	-0.304016734	-0.714142594
Geom._mean	129.0839756	123.3596692

टी मान का परिकलन

प्रतिदर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	स्वातंत्र्य कोटि	संख्या	टी. मान	सार्थकता स्तर
छात्र	131.84	25.908	98	50	.294	.05
छात्रायें	125.9	25.624		50		

टी सारणी को देखने से पता चलता है कि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक होने के लिए टी को कम से कम 1.99 होना चाहिए। जबकि प्राप्त टी मात्र .294 है अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, इसका अर्थ यह हुआ कि छात्र तथा छात्राओं के उपलब्धियों में कोई वास्तविक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना सत्यापित होती है।

९.शोध निश्कर्ष

१.विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन में सम्बन्ध के अध्ययन में पाया गया कि उनकी संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में साथ–साथ बढने की प्रवृत्ति पायी जाती है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का धनात्मक प्रभाव होता है। जिस विद्यार्थी में जितनी अधिक संवेगात्मक बुद्धि होती है अपेक्षाकृत वह घर, पास पड़ोस, विद्यालय, समाज आदि से उतना ही अधिक समायोजन स्थापित करने में सफल होता है। अनुसंधानों के द्वारा यह पाया गया है कि जिन व्यक्तियों में संवेगात्मक बुद्धि की अधिकता होती है वे सामान्य रूप से दूसरों की बात अधिक अच्छी तरह से सुनते एवं समझते है तथा अपने सामाजिक वातावरण से समायोजन स्थापित करने में अधिक कुशल सिद्ध होते है।

२.बालकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में सम्बन्ध के अध्ययन में पाया गया कि उनकी संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में परिमित सहसम्बन्ध है, अर्थात संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में धनात्मक सहसम्बन्ध है।

३.बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में सम्बन्ध के अध्ययन में पाया गया कि उनकी संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में परिमित सहसम्बन्ध है, अर्थात संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में धनात्मक सहसम्बन्ध है।

४.बालक वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नहीं पाया गया साथ ही बालक वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं बालिका वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं पाया गया क्योंकि वर्तमान समय में भारतीय समाज बालकों की तरह बालिकाओं को भी उनके लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा, स्वतन्त्रता आदि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करा रहा है।

सन्दर्भ सूची

1–वुच एम. वी. (1983–88) "फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन" भाग–1, नई दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी.
2–वुच एम. बी. (1990–95) "फिफ्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन" दिल्ली, एम. सी. आइ. आर. टी.।
3–जायसवाल, सीताराम (1992) "शिक्षा का मनोविज्ञान", आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4–शर्मा, आर. ए. (1994) "एडवान्स स्टेटिस्टिक्स इन एजूकेशन एण्ड साइकोलाजी" मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
5–वेन्जमिन, एच. (1994) "परसीव्ड पैरेन्टल एक्सपैक्टेशन ऑन रिजेक्सन एण्ड एडोलसेन्स डिप्रेशन" डी. ए. आई. संस्करण।
6–गोलमान, डी. (1995) इमोशनल इण्टेलीजेन्स, बैण्टम बुक्स, न्यूयार्क।
7–गौटमैन, जे. दि हार्ट आफ पेरेण्टिंगः रेजिंग एन इमोशनली इण्टेलीजेण्ट चाइल्ड।
8–श्रीवास्तव, डी. एन. (1996) "अनुसंधान विधियॉ" आगरा, साहित्य प्रकाशन।
9–अस्थाना, विपिन (1996) "शिक्षा एवं मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन", आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
10– कूपर, आर. के. एण्ड सावफ,(1997) ए0 एक्सक्यूटिव ई.क्यू. ओरियन पब्लिशिंग ग्रुप लि. ग्रेट ब्रिटेन
11– येट्स, जे. एम. (1999)"द रिलेशन बिटवीन इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड हेल्थ हेबिट्स आफ हेल्थ एजूकेशन स्टूडेण्ट्स" डेजर्टेशन एब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल–60–90 ए, 3284
12– क्लैन्स, पी. आर. एण्ड वैयरमैन (1999) "एसेसेसिंग इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड इन्टरपरर्सनल कम्पीटेन्स इन स्टूडेन्ट्स" पी. एच. डी. जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी, अटलांटा, जार्जिया।
13– भटनागर, सुरेश (1999) "एजूकेशनल साइकोलाजी" मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
14– तिवारी, माला (1999) उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राओं की भावात्मक बुद्धि का उनके आत्म बोध, जीवन सम्बन्धी विभिन्न द्वन्द्व, आर्थिक स्तर, तथा शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शोध कार्य।
15– सिंह, प्रताप, विश्वनाथ (1999) "माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन",एम. एड., लघु शोध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर नगर।
16– सिंह योगेश कुमार (2001) "शोध विधियॉ", दिल्ली यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
17– मंजुला एस. (2001) "रिसर्च मैथेडोलाजी", जयपुर, राज पब्लिकेशन।
18– हेनिंग एस. आर., (2001) "द रिलेशसनशिप विट्वीन सोशल एण्ड इमोशनल इंटेलीजेन्स इन चिल्ड्रेन", पीएच. डी. थीसिस, टेन्सी यूनि.।
19– कुमार, डी. (2001) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि का उनके लिंग, वरिष्ठता, भौगोलिक स्थित, वर्ण के सन्दर्भ में किया गया शोध कार्य।
20– एलन एम. जे., (2002),"इनवेस्टिगेटिंग इमोशनल इंटेलीजेन्स इन चिल्ड्रेन एक्सप्लोरिंग इट्स रिलेशनशिप टू काग्निटिव इंटेलीजेन्स", पीएच. डी., डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट्स, इंटरनेशनल इन 06–09, 3254।
21– सानवाल वी. के. (2002), "ए स्टडी आफ कोरिलेट्स एण्ड नेचुरेन्स आफ ई0 आई0 इन प्राईमरी स्कूल चिल्ड्रेन", पीएच. डी. एजूकेशन, जामिया मिलिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय नई दिल्ली।
22– किक ए. (2002) "इमोशनल इंटेलीजेन्स, सोशल कम्पीटेन्स एण्ड सक्सेस इन हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स", पीएच. डी. थीसिस, वेस्टर्न के0 ट्यूकी यूनिवर्सिटी, बाउलिंग ग्रीन।
23– हार्ट्स, जेसिका व थामस (2002) "रिलेशनशिप विट्वीन एडोलसेन्स एडजेस्टमेण्ट एण्ड पेरेण्ट्स विहेबिर", ई. (633400)।

24– सिंह लाल साहब (2002) "मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी" आगरा, साहित्य प्रकाशन।
25– चौधरी, दीक्षा (2002) द्वारा विश्वविद्यालय तथा कालेजों के शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि का लिंग व संकाय के संदर्भ में किया गया शोध कार्य।
26– पार्कर जे डी (2002) "इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड एकेडमिक सक्सेस, इग्जामिनिंग द ट्रांजिशन फ्राम हाई स्कूल" द यूनिवर्सिटी रिसर्च पेपर, साइकोलाजिकल एसोसिएशन, बैकावर।
27– रेकर डी0 एण्ड पार्कर, जे0 डी0 एस0 (2002) "इमोशनल इंटेलीजेन्स मूड एण्ड प्राब्लम विहेबिर इन चिल्ड्रेन एण्ड एडोलसेन्स", फेस्टर सोशन प्रेजेन्टेड एट ए0 पी0 ए0 107 एनुएल कन्वेन्शन बोस्टन, एम0 ए0।
28– पैत्रा स्वाती (2004), "इमोशनल इंटेलीजेन्स इन एजूकेशन मैनेजमैण्ट", वाल्यूम ××× जर्नल आफ इण्डियन एजूकेशन, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पी0 पी0, 98–104।
29– गारबर, जूडी एण्ड स्टेफनी (2004),"इमोशनल एडजेस्टमेण्ट, इमोशनल आटोनामी एण्ड एडोलसेन्स एडजेस्टमेन्ट", ई0 (633400)।
30– देवलाल जी0 एन0 (2004) स्टडी आफ इमोशनल इण्टेलीजेन्स एण्ड जनरल इण्टेलेक्चुअल एविलिटी आफ कुमायूँनी एडोलसेन्स इन रिलेशन टू देअर एकेडमिक एचीवमेण्ट एण्ड एकेडमिक स्ट्रीम पी0 एच0 डी0 (शिक्षा) डेजर्टेशन।
31– दास, देवेन्द्र एण्ड बोहरा, (2004),"टीचर इफेक्टिवनेस रिलेशन टू दियर इमोशनल इंटेलीजेन्स", वाल्यूम ××× जर्नल आफ इण्डियन एजूकेशन, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पी0 पी0 51–61।
32– भार्गव महेश (2005) "मापन एवं मूल्यांकन", आगरा, साहित्य प्रकाशन।
33– गुप्ता एस0 पी0 और गुप्ता अलका (2005)"साख्यिकीय विधियॉ" इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
34– क्लेमेण्ड, पेगी एण्ड रीड (2005),"इफेक्ट आफ मीडियम आफ इजरायली एण्ड सोवियत एडोलसेन्स आन एपीवमेन्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट", ई0 (634560)।
35– नन्दा पी0 एण्ड पान्नू (2005),"इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड सोशियो परसनल फैक्टर", इण्डियन जर्नल आफ साइकोमैट्री एण्ड एजूकेशन।
36– जायरे वी0 एल0 "रिसर्च मैथेडोलाजी", जयपुर, राज पब्लिकेशन।
37– राय पारसनाथ (2006) "अनुसंधान परिचय" आगरा, चावला एण्ड सन्स।
38– श्रीवास्तव डी0 एन0 व अन्य (2006)"माडर्न जनरल साइकोलाजी" आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
39– कुमार जी0 एण्ड भाटिया (2006),"डेवलपिंग इमोशनल इंटेलीजेन्स स्केल इण्डियन जर्नल", साइकोमैट्री एण्ड एजूकेशन, आई0 पी0 ई0 ए0 पटना,वाल्यूम 37(1), 47–51।
40– लौहमैन, ब्रैण्ड जे0, कौरा, शैल्वी ए0, न्यूमैन बारबरा एम0 (2007), "मैच्ड एण्ड मिस मैच्ड इन्वारिनमण्ट द रिलेशनशिप आफ फेमिली एण्ड स्कूल डिफरेन्सिएसन टू एडोलसेन्स साइकोलाजिकल एडजेस्टमेन्ट", जर्नल आफ यूथ एण्ड सोसाइटी, 3–32।
41– मिश्रा, कामाक्षा (2007) स्टडी आफ द व्युलनेरिविलिटी टोअर्ड्स सेल्फ डिस्ट्रक्टिव इण्टेलीजेन्स सिन्ड्रोम एण्ड इमोशनल इन्टेलीजेन्स रिलेटेड एविलिटीज आफ एजूकेशनल एडमिनिस्ट्रेटर्स आु कुमायूँ रीजन आफ उत्तराखण्ड।
42– कौर, सुरिन्दर जीत एण्ड हरजीत (2008)"इफेक्टिवनेस आफ ट्रेनिंग आफ इमोशनल इंटेलीजेन्स आन एडोलसेन्स स्टूडेण्ट्स", एम0 जी0 एम0 कालेज आफ एजूकेशन, जालन्धर, पंजाब।
43– शोकीन, अंजली एण्ड मोहन्ती, एस0 के0 (2008), "ए स्टडी आफ एडजेस्टमेन्ट आफ एडोलसेन्स ब्वायज एण्ड गर्ल्स आफ वर्किंग एण्ड नान वर्किंग मदर्स", इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी, नजफगढ, नई दिल्ली।
44– जोशी, अमिता (2008) स्टडी आफ स्प्रीच्वल इण्टेलीजेन्स एण्ड इमोशनल इण्टेलीजेन्स रिलेटेड एविलिटीज आफ टीचर ट्रेनीज इन रिलेशन टू देअर जण्डर एन्ड सम सोशियो–एजूकेशनल फैक्टर्स। पी0 एच0 डी0 (शिक्षा) डेजर्टेशन, कुमायूँ विश्वविद्यालय नैनीताल।
45– लाल, बिहारी, रमन तथा शर्मा, कृष्णकान्त, (2009),"भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें", मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
46– भटनागर, ए0 बी0, मीनाक्षी व अनुराग,(2009),"अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया", मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
47– पाण्डे, एम0 के0 (2010) स्टडी आफ इमोशनल इण्टेलीजेन्स एण्ड सटिस्फेक्शन विद लाइफ आफ एजूकेशन फार आल प्रोग्राम फक्शनेरीज आफ उत्तराखण्ड इन रिलेशन टू देअर जण्डर एण्ड एकेडमिक फैक्टर्स, पी0 एच0 डी0 (शिक्षा) डेजर्टेशन।

48– जोशी, जे0 के0 (2012), "भावात्मक बुद्धि अर्थ आयाम तथा महत्व/शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार", हल्द्वानी, निदेशालय, अध्ययन एवं प्रकाशन, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।

49– सिंह, रजनी रंजन (2012), "शिक्षा में अनुसंधान विधियॉ व सांख्यिकी", हल्द्वानी, निदेशालय, अध्ययन एवं प्रकाशन, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।